अध्याय – 5

आधुनिक विश्व में चरवाहे

याद रखने योग्य बातें :–

– घुमंतू चरवाहा समुदाय :– वे लोग जो अपने मवेशियों के लिए चारे की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह जाते है।

– **भाबर** – गढ़वाल और कुमाऊँ के इलाके में पहाड़ियों के निचले हिस्से के आस–पास पाया जाने वाला सूखे जंगल का इलाका।

– **बुग्याल** – ऊंचे पहाड़ो में स्थित घास के मैदान।

– **खरीफ़** – वह कृषि ऋतु जिसमें फसलों को वर्षा ऋतु के आरंभ में बोया जाता है तथा शीत ऋतु के आरंभ में काट लिया जाता है।

– **रबी** – वह कृषि ऋतु जिसमें फसलों को शीत ऋतु के आरंभ में बोया जाता है तथा ग्रीष्म ऋतु के आरंभ में काट लिया जाता है।

– घुमंतू चरवाहे विश्व के प्रत्येक हिस्से में पाए जाते है।

– औपनिवेशिक शासन के दौरान चरवाहों के जीवन शैली में गहरे परिवर्तन आए।

– 1871 में औपनिवेशिक सरकार ने अपराधी जनजाति अधिनियम पारित किया व इनको जन्मजात अपराधी घोषित किया।

– प्रतिबंधो के बावजूद घुमंतू चरवाहों ने समय के साथ अपने आपको ढाल लिया।

– हिन्दुस्तान की तरह अफ्रीकी चरवाहों के जीवन में भी औपनिवेशिक और उत्तर–औपनिवेशिक काल में गहरे परिवर्तन आए हैं।

– आज भी अफ्रीका में तकरीबन सवा दो करोड़ लोग रोज़ी रोटी हेतु किसी न किसी तरह की चरवाही गतिविधियों पर निर्भर हैं।

– अधिकतर चरवाहे गाय, बैल, ऊँट, बकरी, भेड़ व गधे पालते हैं और मांस दूध, पशुओं की खाल व ऊँन बेचते है। कुछ चरवाही के अलावा खेती भी करते है।

– औपनिवेशिक शासन से पूर्व मासाईयों के पास जितनी ज़मीन थी उसका तकरीबन 60

प्रतिशत हिस्सा उनसे छीन लिया गया।

– कई चरागाहो को शिकारगाह बना दिया गया। कीनिया में मासाईमारा व साम्बूरू नैशनल पार्क और तंजानिया में सैरेंगेटी पार्क इसी प्रकार अस्तित्व में आए।

– बदलते हालात के कारण मासाई मक्का, चावल, आलू, गोभी, जैसे उन खा़द्य पदार्थो पर आश्रित होते जा रहे है जो उनके क्षेत्र में पैदा नहीं होते।

– मासाईयों का यह मानना है कि फसल उगाने के लिए ज़मीन पर हल चलाना प्रकृति के अनुकूल नहीं है। इसकी वजह से ज़मीन चरवाही के लायक नहीं रहती।

– औपनिवेशिक काल से पहले मासाई लैंड उत्तरी कीनिया से लेकर तंज़ानिया के घास के मैदानों (स्टेपीज़) तक फैला हुआ था।

– 1885 में कीनिया और तांगान्यिका के बीच सीमा खींचकर मासाईलैंड को दो समान टुकडो में परिवर्तित कर दिया गया।

– 1919 में तांगन्यिका ब्रिटेन के कब्ज़े में आ गया। 1961 में उसे आजादी मिली और 1964 में ज़ंजीबार के मिलने के बाद उसे तंजानिया का नाम दे दिया गया।

– चरवाहो को गोरों के क्षेत्र में पड़ने वाले बाज़ारों में दाखिल होने से भी रोक दिया गया।

– औपनिवेशिक सरकार द्वारा चरवाहो पर लगी पाबंदी के कारण इनके जानवरों की संख्या बहुत ही कम हो गई।

– उपनिवेश बनने से पूर्व मासाई समाज दो सामाजिक वर्गों में बँटा हुआ था – वरिष्ठ जन (ऐल्डर्स) और योद्धा (वॉरियर्स)

1 अंक वाले प्रश्न :–

1. घुमंतू चरवाहा को परिभाषित कीजिए।
2. बंजारा समुदाय के लोगो द्वारा रोज़ी–रोटी के लिए किए जाने वाले कार्यो का उल्लेख कीजिए।
3. गद्दी समुदाय के लोगों द्वारा व्यापार किए जाने वाले किन्ही दो उत्पादों के नाम बताइए।

4. राइका समुदाय के लोग कहाँ रहते है?

5. गुज्जर बकरवाल किन दो क्षेत्रों के मध्य घूमते रहते है?

6. भाबर क्या है?

7. ऊँचे पहाड़ो पर स्थित घास के मैदान को किस नाम से जाना जाता है?

8. रबी की फसल किस ऋतु में बोई जाती है?

9. वह कृषि जिसमें फसलों को वर्षा ऋतु के आरंभ में बोया और शीत ऋतु के आरंभ में काटा जाता है उसका नाम बताइए।

10. पश्चिमी राजस्थान में किस जगह ऊँट मेला लगता है?

11. औपनिवेशिक सरकार ने घुमंतूओं को अपराधी जनजातियों के रूप में क्यों वर्गीकृत किया?

12. औपनिवेशिक सरकार द्वारा घुमंतू लोगों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगाने हेतु 19वीं शताब्दी में पारित किन्हीं दो अधिनियमों के नाम बताइए।

13. मासाई समुदाय के लोगो को श्वेत क्षेत्र के बाज़ारो में प्रवेश की अनुमति क्यों नहीं थी।

3/5 अंक वाले प्रश्न

1. कोंकणी क्षेत्र में घंगर समुदाय के लोगों के आगमन से वहाँ की कृषि भूमि को किस प्रकार लाभ पहुँचता था?

2. कीनिया एवं तंजानिया के चरागाहों में औपनिवेशिक सरकार द्वारा विकसित दो शिकारगाहों के नाम बताइए। इससे मासाई पशुपालकों का जीवन कैसे प्रभावित हुआ?

3. वर्णन कीजिए कि कुरूमा एवं कुरूबा समुदाय के लोगों की आवाजाही किस प्रकार उनके पशुओं की जरूरतों से प्रेरित थी?

4. घुमंतू समुदाय अपने स्थान क्यों बदलते थे?

5. वन कानूनों का चरवाहों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

6. अंग्रेज़ सरकार चरागाहों को कृषि की ज़मीन में क्यों बदल देना चाहती थी?

उत्तर माला

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर :–

1. घुमंतू चरवाहे वे लोग है जो अपनी भेड़ो और बकरियों के झुंड के साथ एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में घूमते रहते है।
2. बंजारा समुदाय मवेशी, हल एवं अन्य वस्तुए बेचकर अपनी जीविका प्राप्त करते थे।
3. ऊन तथा दुग्ध उत्पाद
4. राजस्थान के बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर तथा बीकानेर में।
5. शिवालिक श्रेणी से कश्मीर तक।
6. गढ़वाल और कुमाऊँ के इलाके में पहाड़ियों के निचले हिस्से के आस पास पाया जाने वाला सूखे जंगल का इलाका भाबर कहलाता है।
7. बुग्याल
8. शीत ऋतु
9. खरीफ
10. पुष्कर
11. औपनिवेशिक सरकार घुमंतू लोगों को संदेह की दृष्टि से देखती थी, क्योंकि उन पर नियंत्रण रख पाना कठिन था।
12. क) अपराधी जनजाति अधिनियम

    ख) वन अधिनियम
13. क्योंकि यूरोपीय औपनिवेशिक ताकत उन्हे बर्बर और खतरनाक मानती थी।

3 या 5 अंक वाले प्रश्न के उत्तर –

1. क) धंगर अक्टूबर–नवंबर में चारे की कमी के कारण महाराष्ट्र के मध्य पठारों से चल पड़ते है।

   ख) वे कोंकण में जाकर डेरा डालते हैं। अच्छी बारिश और उपजाऊ मिट्टी की बदौलत इस इलाके में खूब खेती होती है।

ग) कोंकणी किसान इन चरवाहों का दिल खोलकर स्वागत करते हैं। कोंकण के किसानों को रबी की फसल के लिए अपने खेतों को दोबारा उपजाऊं बनाना होता है।

घ) घंगरो के मवेशी खेतो में बची रह गई ठूँठों को खाते हैं और उनके गोबर से खेतों को खाद मिल जाती है।

ड) मानसून की बारिश शुरू होते ही घंगर कोंकण और तटीय इलाके छोड़कर सूखे पठारों की तरफ लौट जाते हैं, क्योंकि भेड़ें गीले मानसूनी हालात को बर्दाश्त नहीं कर पाती हैं।

2. औपनिवेशिक सरकार ने बहुत सारे चरागाहों को शिकारगाहों में बदल दिया। उनमें से कीनिया के मासाईमारा तथा साम्बूरू नैशनल पार्क इलाकों में मासाई पशुपालको को शिकार करने, जानवरों को चराने या घुसने की मनाही थी।

3. क) कुरूमा और कुरूबा समुदाय के लोगो की आवाजाही पशुओं की ज़रूरतों से प्रेरित होती थी।

ख) ये लोग बरसात व सूखे मौसम के हिसाब से अपनी जगह बदलते थे।

ग) सूखे के महीनों में वे लोग तटीय इलाको की तरफ चले जाते थे और बरसात शुरू होने पर वापस चल देते थे।

घ) मानसून के दिनों में तटीय इलाकों में ज़मीन दलदली हो जाती थी जो भैंसों को रास आती थी।

ड) अन्य जानवरों को सूखे पठारी इलाकों में ले जाया जाता था।

4. क) अच्छे चरागाह की खोज

ख) मौसमों के बदलने के कारण

ग) पानी की खोज

घ) कंदमूल फल सब्जियों की खोज

ड) उत्पादों को बेचने के लिए

5. क) वनों में पशुओं को चराने पर रोक लगा दी गई थी।

   ख) वनों में आने जाने का समय तय कर दिया गया।

   ग) जंगलों में जाने का परमिट लेना पड़ता था।

   घ) जलावन की लकड़ी नहीं ले पाते थे।

   ङ) नियमों को न मानने पर भारी जुर्माना।

6. क) सरकार का मानना था कि इससे कर लगाकर आमदनी बढ़ेगी।

   ख) ऐसा सोचना कि वन बेकार होते है जबकि कृषि फायदेमंद है।

   ग) चरवाहों को वनो से दूर करना।

   घ) ऐसे वन जहाँ टीक, साल, सागौन व शीशम के पेड़ थे उनसे लकड़ी का मिलना।

   ङ) इससे जूट (पटसन) कपास, गेहूँ, आदि का उत्पादन बढ़ जाता था जिनकी इंग्लैंड में बहुत मांग थी।

शब्दावली

भारत के घुमंतू चरवाहे

क्र.स.	चरवाहा समुदाय का नाम	क्षेत्र
1	गुज्जर बकरबाल	जम्मू व कश्मीर
2.	गद्दी	हिमाचल प्रदेश
3.	भोटिया	उत्तराखंड
4.	राइका	राजस्थान
5.	बंजारा	राजस्थान, मध्य प्रदेश
6.	मलधारी	गुजरात
7.	कुरूमा, कुरूबा, गोल्ला	कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना
8.	धंगर	महाराष्ट्र
8.	मोनपा	अरूणाचल प्रदेश

अफ्रीका के घुमंतू चरवाहे

क्र.स.	चरवाहा समुदाय का नाम	क्षेत्र
1	मासाई	कीनिया, तंजानिया
2.	बेदुईस	उत्तरी अफ्रीका
3.	बरबेर्स	उत्तर पश्चिमी अफ्रीका
4.	तुर्काना	उंगाडा
5.	बोरान	कीनिया
6.	मूर्स	मोरिटानिया
7.	सोमाली	सोमालिया
8.	नामा	दक्षिण अफ्रीका
9.	बेजा	म्रिस, सूडान
10.	जुलू	दक्षिण अफ्रीका

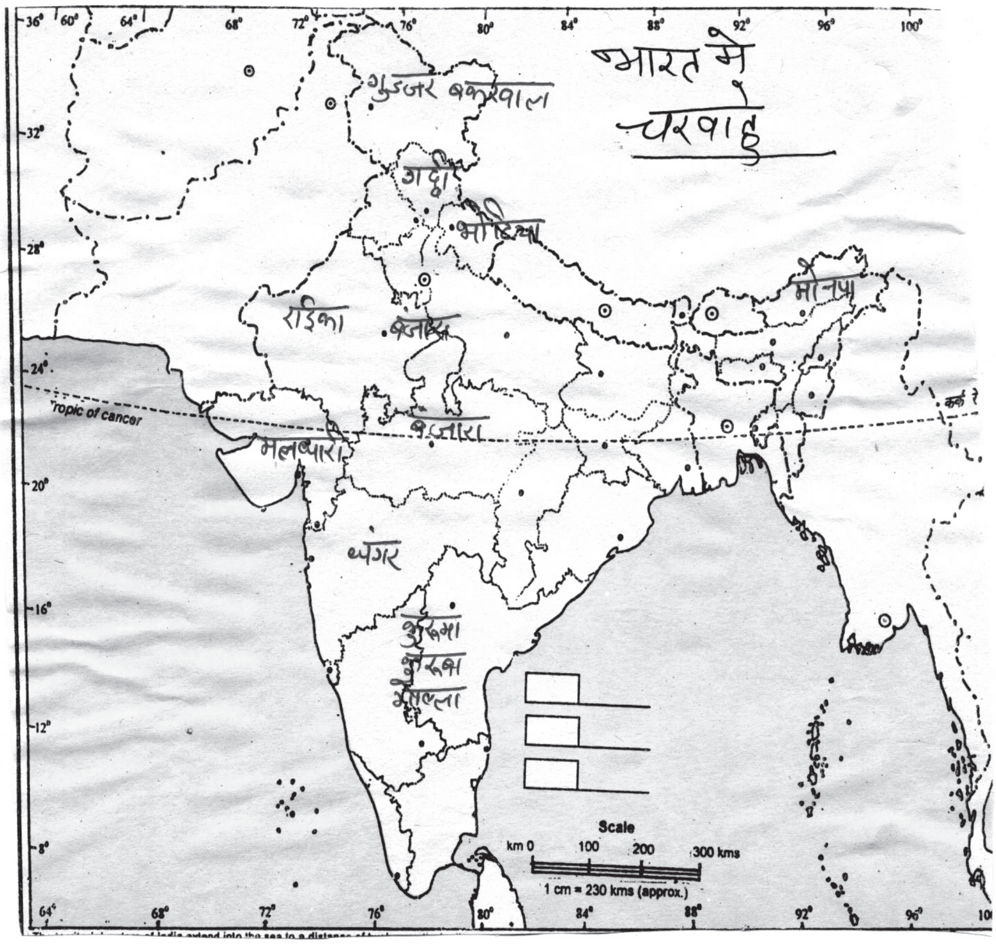
भारत मे चरवाहे
गुज्जर बकरवाल
गद्दी
भोटिया
राइका
बंजारा
मलधारी
धंगर
कुरुमा
कुरुबा
गोल्ला
मोनपा
ropic of cancer
Scale
km 0 100 200 300 kms
1 cm = 230 kms (approx.)

AFRICA

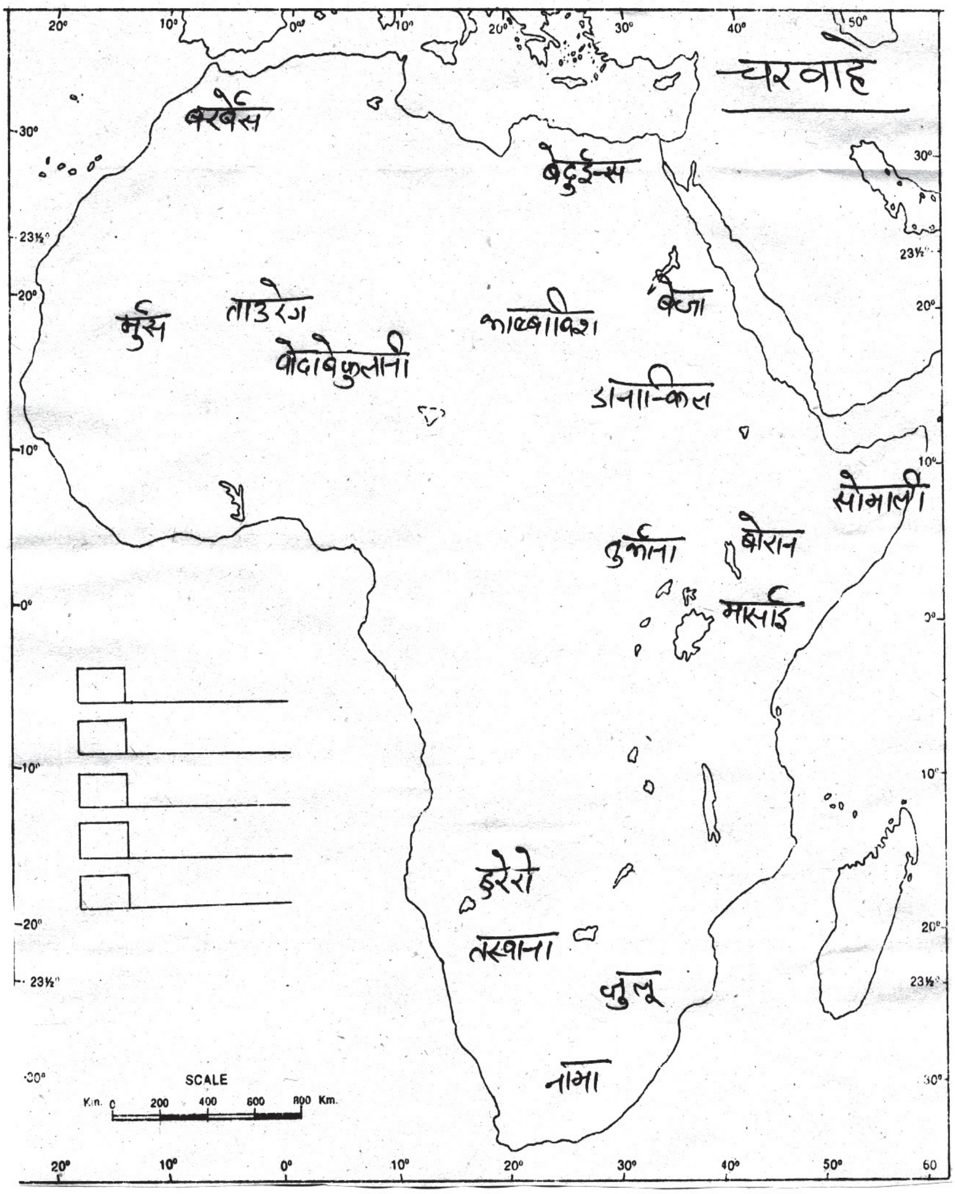
चरवाहे
बरबेर्स
बेदुईन्स
मुर्स
ताउरेग
काब्बाबिश
बेजा
डानाकिल
सोमाली
तुर्काना
बोरान
मसाई
हरेरो
तस्वाना
जुलू
नामा
SCALE
Km. 0 200 400 600 800 Km.